एस्टोनियाई परी कथा

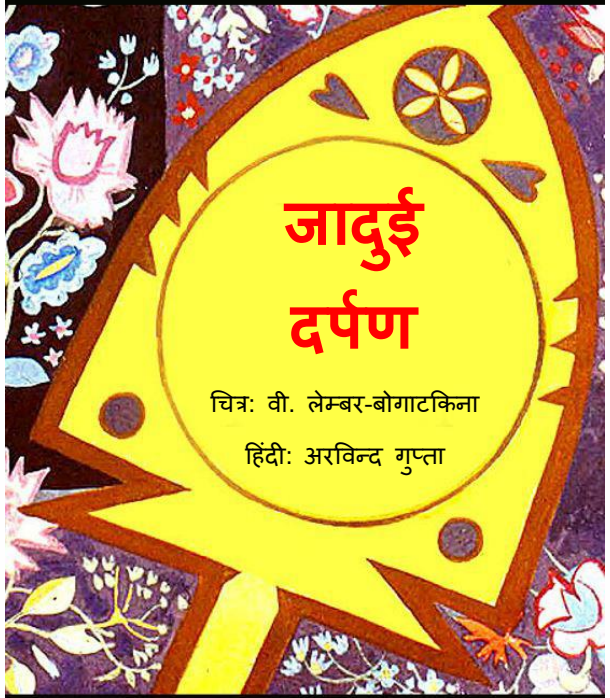

एक समय की बात है, बहुत समय पहले की, तब एक बहुत प्रसिद्ध और अमीर राजा रहता था. उसके पास दस राजाओं से भी अधिक धन-दौलत थी.

क्योंकि वह इतना अमीर था इसलिए राजा ने यह बात अपने मन में बांधकर रख ली थी कि वह कभी बूढ़ा नहीं होगा. लेकिन ऐसा नहीं हुआ क्योंकि बुढ़ापा सभी को आता है, चाहे कोई अमीर हो या गरीब. राजा इस बात से बहुत परेशान था. उसके साथ ऐसा कैसे हो सकता था?

क्या उसमें और उसके राज्य के आखिरी भिखारी में कोई अंतर नहीं था? वह एक साथ दस राजाओं जितना अमीर था, लेकिन उसके बाल किसी अन्य बूढ़े जैसे ही सफेद हो रहे थे और झड़ रहे थे.

"चीजें इस तरह नहीं होनी चाहिए," राजा ने सोचा और उसने अपने बेटों को अपने पास बुलाया.

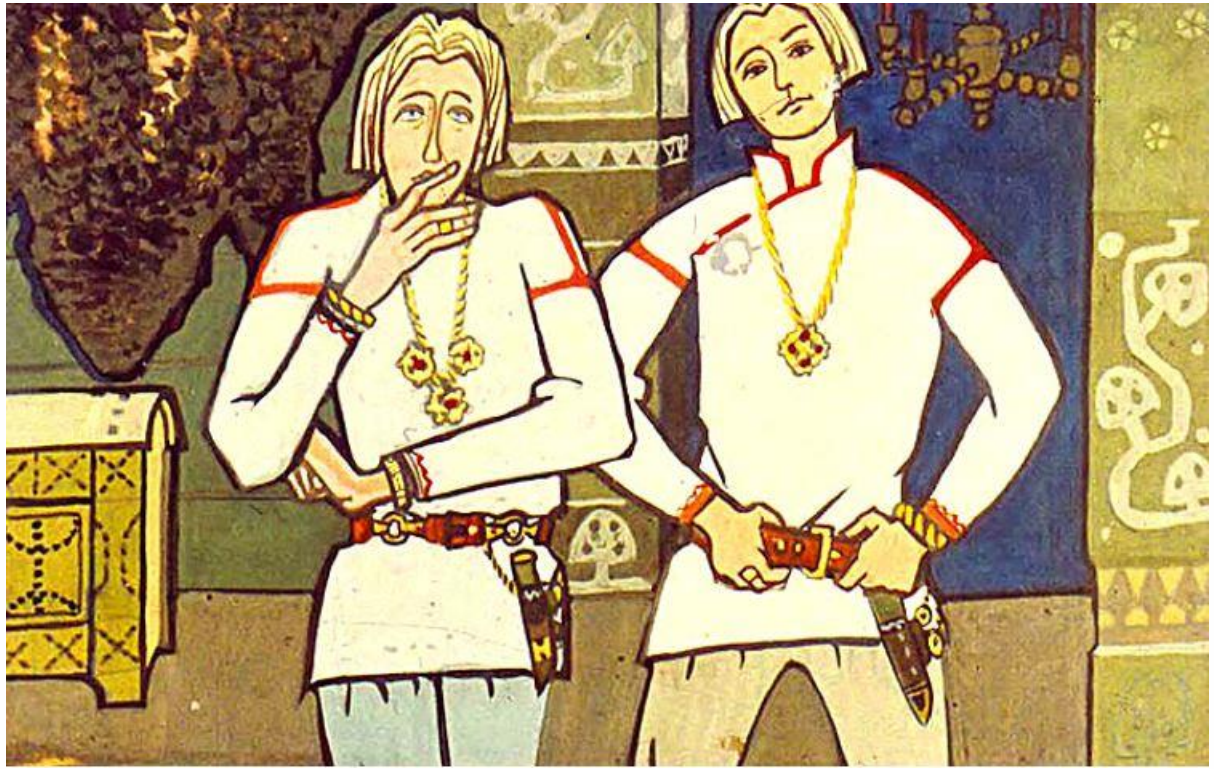

अब, उसके तीन बेटे थे लेकिन उसने केवल दो बड़े बेटों को ही बुलाया, क्योंकि उसका सबसे छोटा बेटा एक सरल स्वभाव का लड़का था जिसका उसके भाई मज़ाक उड़ाते थे और उसे मूर्ख बुलाते थे. लेकिन छोटा इतने अच्छा स्वभाव का था कि उसने कभी भी इस बात का बुरा नहीं माना.

उसके आदेश पर दोनों बड़े बेटे आए, और राजा ने उनसे कहा:

"जब मैं बच्चा था तो मैंने सुना था कि पृथ्वी पर कहीं एक जादुई दर्पण है, जिसमें दोबारा युवा होने के लिए केवल देखना भर होता है. तुम में से जो भी मेरे लिए वो दर्पण लाएगा, मैं उसे अपना आधा राज्य दे दूंगा. मेरे लिए उस दर्पण को ढूंढो, और अगर तुम मुझे तो खुश करोगे तो फिर तुम खुद भी खुश होगे. तुरंत जाने के लिए तैयार हो जाओ और तुम्हें जो कुछ भी चाहिए उसे अपने साथ लेते जाओ."

बेटे बहुत खुश हुए और उन्होंने राजा से उन्हें एक गाड़ी, छह घोड़े और सोने की एक पूरी बोरी देने को कहा.

राजा ने उन्हें वह सब कुछ दिया जो उन्होंने माँगा, और बेटों ने घोड़ों पर काठी बाँधी, सोने की बोरी गाड़ी में रखी और कोचवान को बुलाया. फिर वे कोच में चढ़े और अपनी यात्रा पर निकल पड़े.

सबसे छोटे बेटे को जब इस बात का पता चला तो वह भी अपने पिता के पास गया और उसने अपने पिता से उसे भी जादुई दर्पण की तलाश में भेजने को कहा.

राजा ने हंसते हुए कहा:

"तुम्हारे जैसा मूर्ख कहाँ जाएगा? तुम्हारी मूर्खता ही तुम्हारा अंत होगी. बेहतर होगा कि तुम बाहर बाग़ में जाओ और टहलो. तुम्हारे भाई तुम्हारे बिना बहुत अच्छा काम करेंगे."

लेकिन छोटा लड़का इस बात से बहुत आहत हुआ कि उसे अपने भाइयों के साथ शामिल होने के लिए बहुत छोटा और मूर्ख समझा गया था.

"ठीक है, बहुत अच्छा!" राजा अंततः सहमत हो गया. "अच्छा जैसा तुम कह रहे हो वैसा ही करो. केवल यह मत सोचना कि मैं छह घोड़ों और एक बोरी सोने के मामले में तुम पर भरोसा करूंगा. तुम जैसे हो वैसे ही जाओ, और यदि तुम किसी मुसीबत में पड़ो तो उसके लिए तुम खुद अपने आपको ही दोष देना."

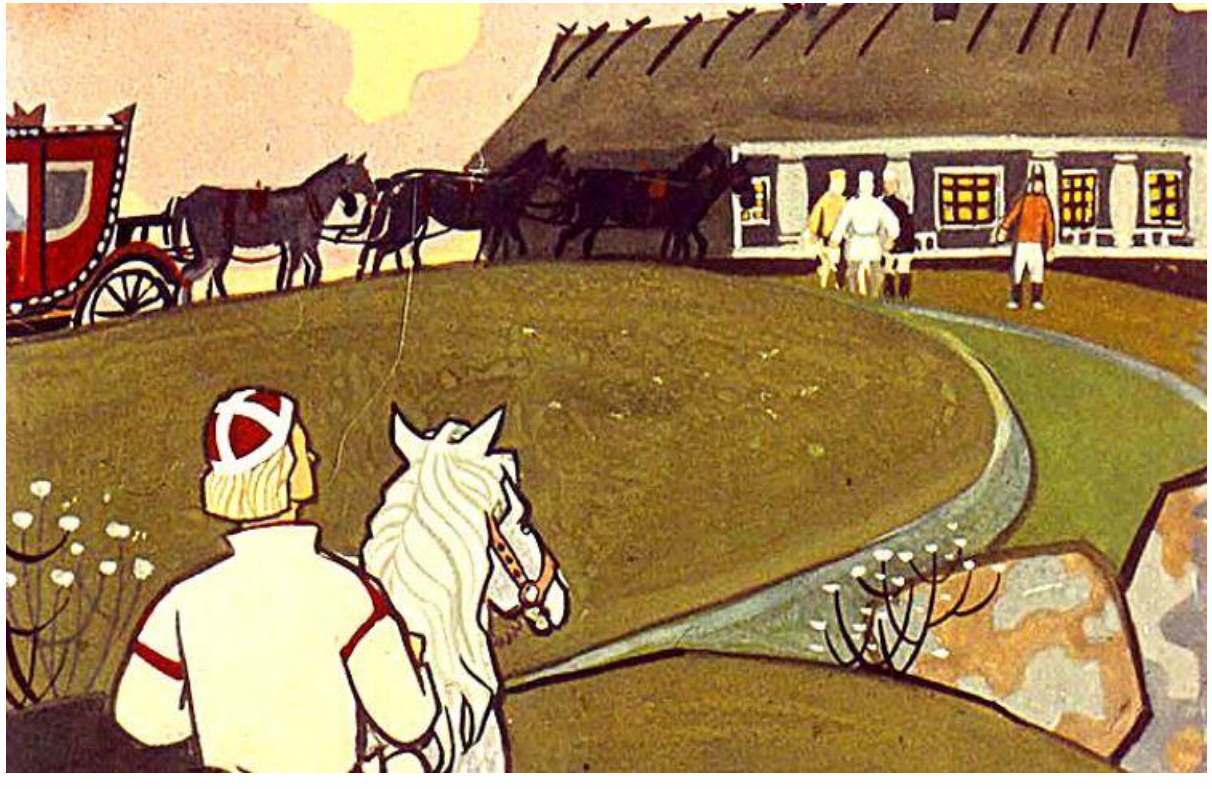

परन्तु मूर्ख बहुत प्रसन्न हुआ, क्योंकि उसके लिए इतना ही काफी था कि उसे जाने की अनुमति मिल गई थी.

उसने अपने पैसे गिने और पाया कि उसके पास केवल दस थालर थे, जिसका मतलब था कि, वह कितना भी चाहे, वो अपने लिए एक अच्छा घोड़ा नहीं खरीद सकता था. अंत में, उसे केवल एक बहुत बूढ़ा और घिसा-पिटा भूरा घोड़ा ही मिला.

मूर्ख, घोड़े की पीठ पर चढ़ गया और चल पड़ा. घोड़ा बहुत धीरे-धीरे घिसटता रहा, बीच-बीच में उछल-कूद करता रहा, लेकिन इससे मूर्ख को कोई परेशानी नहीं हुई, उसने सोचा, मैं अपने रास्ते पर हूं, फिर मुझे और क्या चाहिए!

शाम के समय वह एक बड़ी सराय पर पहुंचा. एक कोच और छह घोड़े सराय के दरवाजे पर खड़े थे.

"इसका मतलब है कि मेरे भाई यहाँ हैं!" उसने खुद से कहा. "मैं अंदर जाऊंगा और उन्हें ढूंढूंगा और फिर शायद वे मुझे अपने साथ ले चलें."

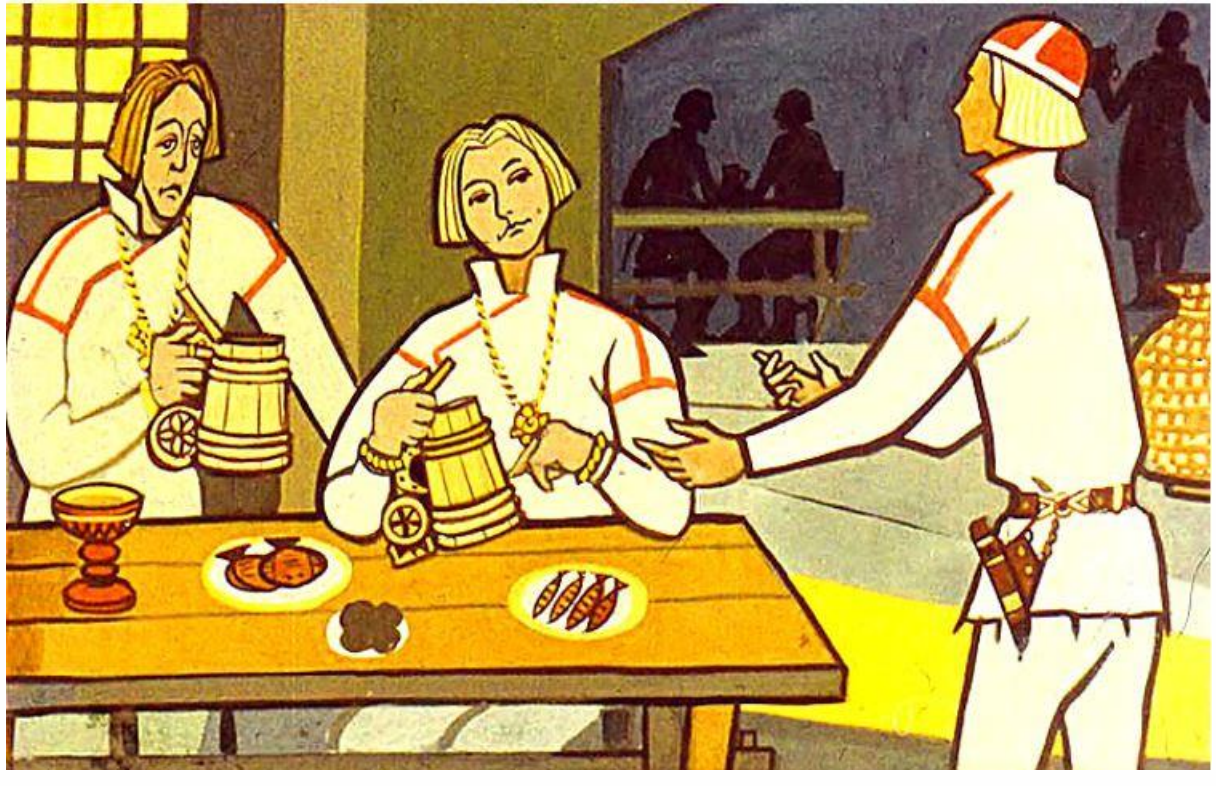

वह अपना घोड़ा बाँधकर सराय में गया और जब उसके भाइयों ने उसे देखा तो वे हँसने लगे.

"तुम कहां जा रहे हो?" उन्होंने पूछा.

"मैं जादुई दर्पण ढूंढना चाहता हूं," मूर्ख ने कहा, "मुझे भी अपने साथ ले चलो तब हम उसे अच्छी तरह ढूंढ पाएंगे."

"चले जाओ मूर्ख! अगर तुम्हें कुछ हो गया, तो हमें ही उसका जवाब देना पड़ेगा."

उससे उस मूर्ख को सचमुच बहुत बुरा लगा. वह सराय से बाहर निकला, फिर से अपने घोड़े की पीठ पर चढ़ा और आगे बढ़ गया.

उसके दोनों बड़े भाई सराय में रुके रहे और दर्पण की तलाश में कहीं भी नहीं गए.

"भेड़िये, मूर्ख को उसके घोड़े समेत खा जायेंगे!" भाई हँसे. "तब उसे एक बढ़िया दर्पण मिलेगा."

मूर्ख आगे बढ़ता रहा और अंत में वह एक बड़े हरे-भरे जंगल में पहुँचा. वह उसके चारों ओर घूम रहा था कि तभी उसे एक छोटा-सा संकरा रास्ता दिखाई दिया. उसने उस रास्ते पर जाने का निर्णय लिया, क्योंकि उसने सोचा, जंगल में ही व्यक्ति को हमेशा नई चीज़ें मिलती हैं.

पूरे दिन वह सवारी करता रहा, और ऊब और अकेलापन महसूस करते हुए, उसने एक पेड़ से एक शाखा तोड़ी और उससे अपने लिए एक छोटा सा पाइप बना लिया.

वह एक दिन के लिए सवार हुआ, उसने दूसरे दिन सवारी की, और तीसरे दिन वह एक छोटे से घास के मैदान में पहुंचा, जहां एक विशाल ओक के पेड़ के नीचे, एक छोटी सी झोपड़ी खड़ी थी.

झोपड़ी में घुसने की इच्छा रखते हुए, उसने उसके करीब जाने का फैसला किया, लेकिन इससे पहले कि वह यह कर पाता, एक भूरे रंग की छोटी बूढ़ी औरत बरामदे में आई.

"अच्छा, ठीक है! आख़िरकार कोई तो मुझे देखने के लिए आया है!" उसने कहा. "मैंने एक जंगल को मरते और सड़ते और दूसरे जंगल को बड़ा होते देखा है. देखो मैं यहां इतने लंबे समय से हूं, लेकिन इतने समय में मैंने एक बार भी कोई जीवित आत्मा नहीं देखी. तुम यहां क्यों आए हो?"

"मैं एक दर्पण ढूंढ रहा हूं, दादी," मूर्ख ने समझाया. "वो कोई साधारण दर्पण नहीं, बल्कि एक जादुई दर्पण है, जिसमें फिर से जवान बनाने की शक्ति है. और मेरे पिता बूढ़े होना नहीं चाहते हैं, इसलिए उन्होंने मुझे उसकी तलाश में भेजा है. क्या आप जानती हैं कि मैं कहां जा सकता हूं उसे कैसे ढूंढ सकता हूँ, दादी?“

"नहीं, मेरे बेटे, मैं नहीं जानती, मैंने पहली बार ऐसे दर्पण के बारे में सुना है. लेकिन मेरी एक बहन है जो मुझसे भी बड़ी है और हो सकता है कि वह इसके बारे में कुछ जानती हो. तुम उसे देखने क्यों नहीं जाते? तुम्हें उसके घर पहुंचने में तीन दिन लगेंगे."

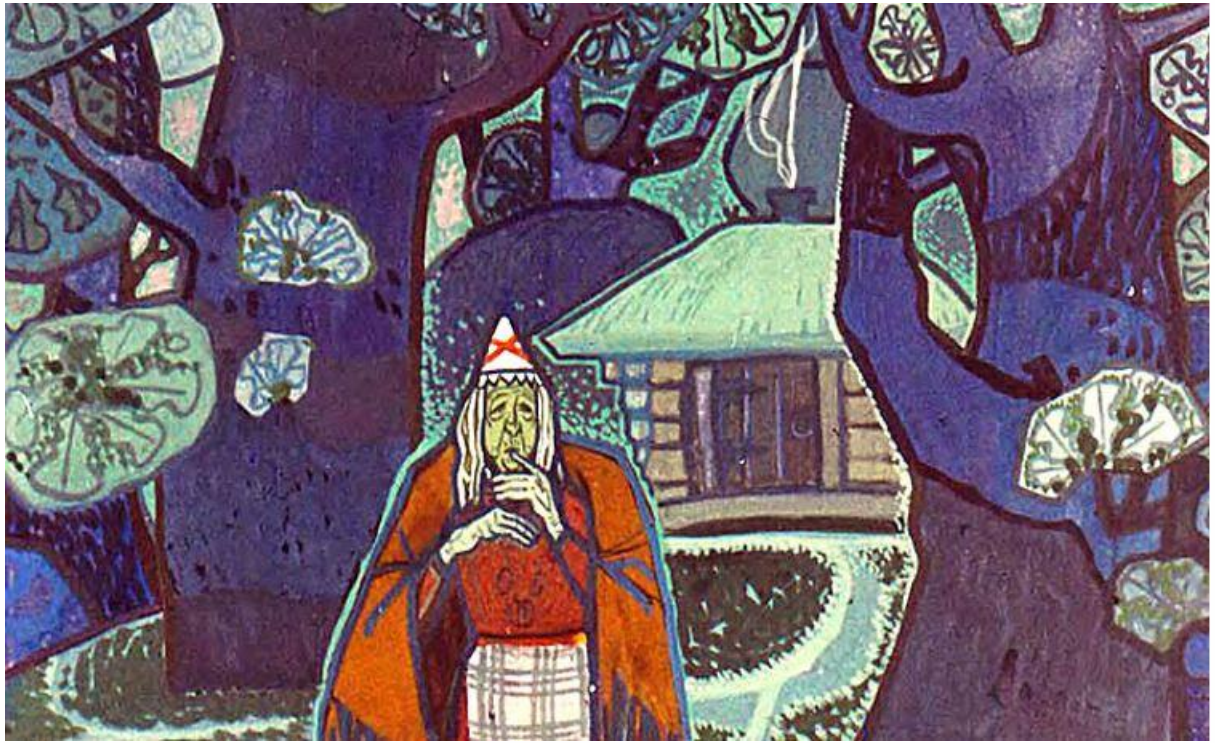

मूर्ख ने उसे धन्यवाद दिया और आगे बढ़ गया और तीन दिन में वह बुढ़िया की बड़ी बहन के घर पहुँच गया. और वो भी उसे देखकर आश्चर्यचकित हुई!

"तुम यहाँ क्यों आये हो?" उसने पूछा.

मूर्ख ने उसे दर्पण के बारे में बताया और पूछा कि वह उसे कहां मिलेगा.

"यह ऐसी बात है जो मैं तुम्हें नहीं बता सकती," बुढ़िया ने कहा, "मैंने अपनी युवावस्था में ऐसी किसी चीज़ के बारे में सुना था, लेकिन वह कहां है मुझे नहीं पता. लेकिन शायद मेरी बड़ी बहन जानती हो. वह हम तीनों में सबसे बुद्धिमान और सबसे बड़ी है. तुम उसे देखने क्यों नहीं जाते? तुम्हें उसके घर पहुंचने में तीन दिन लगेंगे."

मूर्ख ने उसे धन्यवाद दिया और आगे बढ़ गया और तीन दिन में वह सबसे बुजुर्ग महिला के घर पहुंचा. और वह उसे देखकर अपनी बहनों से भी अधिक आश्चर्यचकित हुई!

"तुम यहाँ क्यों आये हो?" उसने पूछा.

मूर्ख ने उसे दर्पण के बारे में बताया और पूछा कि उसे वो दर्पण कहां मिलेगा.

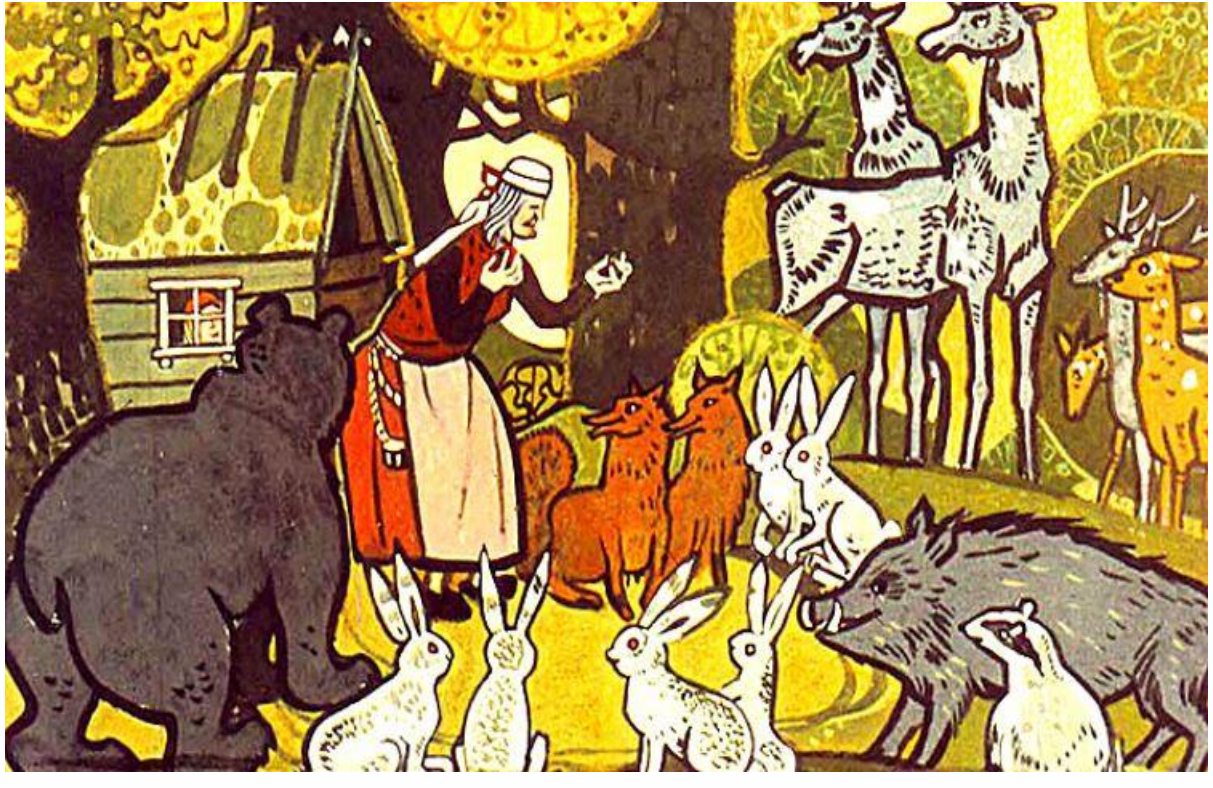

"यह ऐसी बात है जो मैं तुम्हें नहीं बता सकती," बुढ़िया ने कहा, "मैंने अपनी युवावस्था में ऐसी किसी चीज़ के बारे में सुना था, लेकिन वह कहाँ है मुझे नहीं पता. लेकिन शायद मेरा एक नौकर उसके बारे में जानता हो. बेहतर होगा कि तुम अपने घोड़े से उतरो और मेरे घर में आओ."

मूर्ख झोपड़ी में आया और वहां इतनी रोशनी और साफ-सफाई थी कि वह काफी चकित हुआ.

बुढ़िया ने एक शेल्फ से एक लंबी, नक्काशीदार सीटी ली और उसे लेकर बरामदे में गई. उसने एक बार ज़ोर से सीटी बजाई, और लो! - पूरा जंगल जीवंत हो उठा और सरसराहट होने लगी मानो घास को कई-कई फुट रौंदा जा रहा हो. मूर्ख ने खिड़की से बाहर देखा और देखा कि जंगल के सभी जानवर झोपड़ी के पास इकट्ठे हो गए थे.

बुढ़िया ने उनसे बात की और फिर से अपने मेहमान के पास गई.

"नहीं, मेरे वन सेवक दर्पण के बारे में कुछ नहीं जानते," उसने कहा. "मैं अपने अन्य नौकरों को बुलाऊंगी - शायद उन्होंने इसके बारे में कुछ सुना होगा."

और उसने शेल्फ से एक और नक्काशीदार सीटी ली, और, फिर से बरामदे में आकर, पहले से भी अधिक जोर से बजाई.

और फिर से जंगल में सरसराहट शुरू हो गई - केवल घास नहीं थी जो इस बार सरसराहट कर रही थी, बल्कि शाखाएं भी पवन चक्कियों की भुजाओं जैसे गोल-गोल घूमने जैसी आवाज कर रही थीं. मूर्ख ने खिड़की से बाहर देखा और देखा कि हवा के सभी पक्षी झोंपड़ी में आ गए थे.

बुढ़िया ने उनसे बात की और फिर से अपने मेहमान के पास आई.

"नहीं," उसने कहा, "मेरे ये नौकर पहले वाले से ज्यादा कुछ नहीं जानते. लेकिन मेरा एक और नौकर है, जो उन सबमें सबसे बुद्धिमान है. अगर उसने दर्पण के बारे में नहीं सुना है, तो इसका मतलब है कि ऐसी कोई चीज़ मौजूद नहीं है."

बुढ़िया ने शेल्फ से तीसरी नक्काशीदार सीटी ली और बरामदे की ओर जाने लगी.

उसने कहा, "तुम स्वयं सुन सकते हो कि मेरे सबसे बुद्धिमान नौकरों को क्या कहना है." और उसने इतनी ज़ोर से फूंक मारी कि मूर्ख के कान बंद हो गए.

और अब गड़गड़ाहट की आवाज आई और वह इतनी तेज थी कि ऐसा लग रहा था मानो जंगल के ऊपर से तूफान गुजर रहा हो.

एक बड़ा दो सिर वाला बाज़ घास के मैदान में आया, और एक पत्थर पर बैठकर, अपने पंख हिलाकर उसने पूछा:

"जंगल की माँ क्या चाहती है?"

बुढ़िया ने कहा, "मैं जानना चाहती हूं कि जादुई दर्पण कहां मिलेगा."

बाज ने उत्तर दिया, "मैं तुम्हें बता सकता हूं कि है वो कहां है, लेकिन इससे तुम्हें कोई फायदा नहीं होगा, क्योंकि कोई भी आदमी उस तक पहुंचने की उम्मीद नहीं कर सकता है. वह एक राजकुमारी के कक्ष में छिपा हुआ है जो समुद्र के बीच में एक द्वीप पर रहती है, और द्वीप के चारों ओर चट्टानें इतनी ऊंची हैं कि कोई भी जहाज उसके किनारे तक नहीं जा सकता है."

“एक आदमी जो नहीं कर सकता, वह तुम कर सकते हो,” बुढ़िया ने बाज से कहा. "मेरे इस मेहमान को अपनी पीठ पर बिठाओ और उसे उस द्वीप तक ले जाओ!"

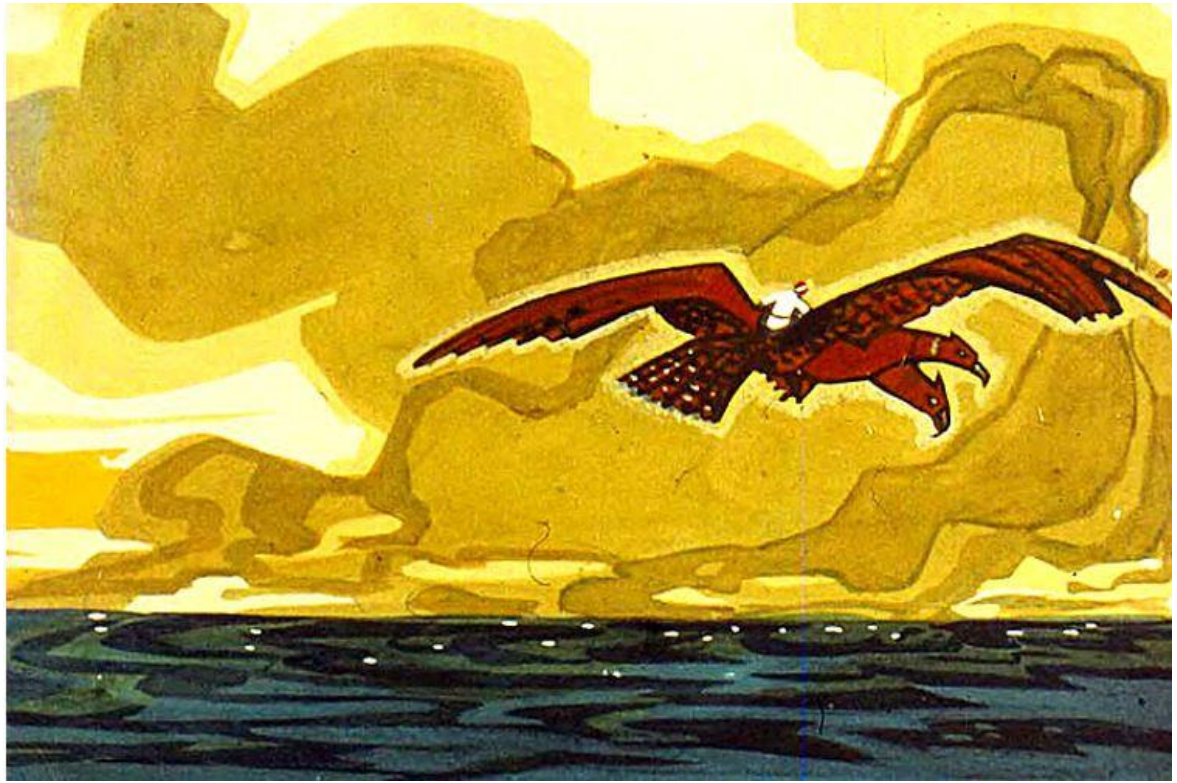

बाज़ ने अपने पंख फैलाये, मूर्ख उसकी पीठ
पर चढ़ गया और आकाश की ओर उड़ गया.

नौ दिन और नौ रात तक वे उड़ते रहे और
आख़िरकार वे समुद्र के बीच में स्थित द्वीप पर पहुँचे.

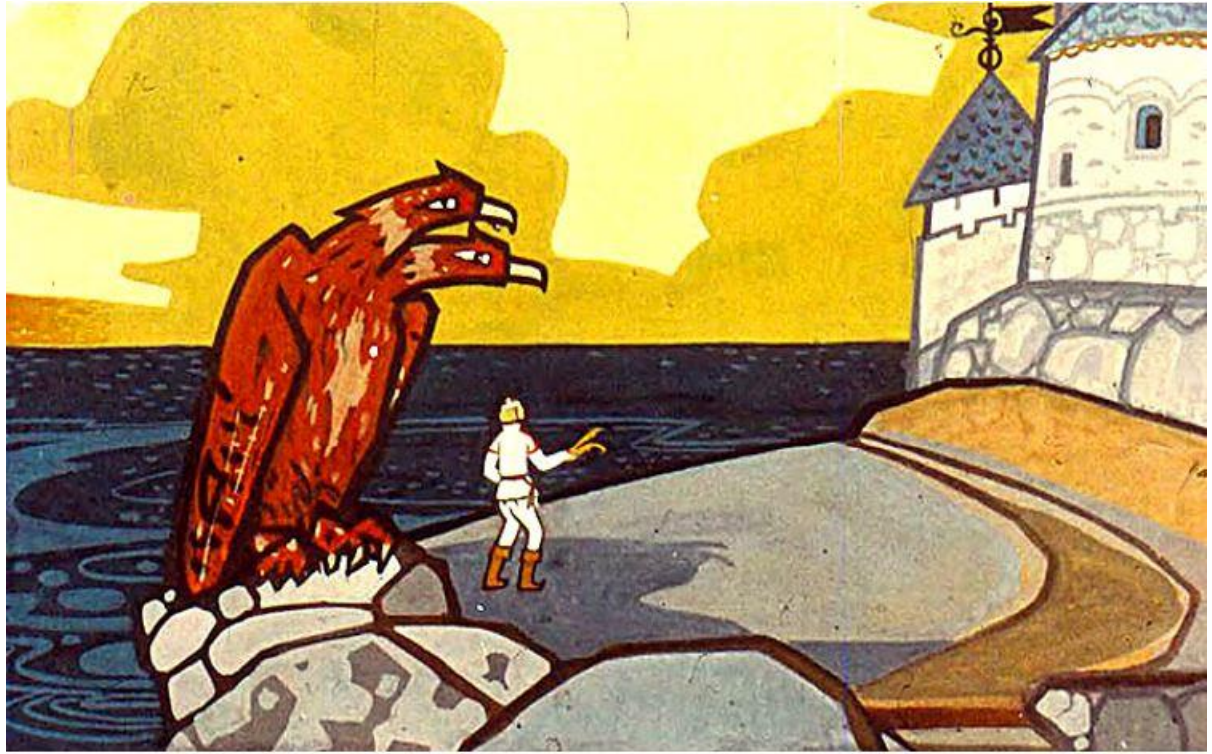

बाज़ ने कहा:

"जब रात होगी तो तुम महल में जाना और राजकुमारी का दर्पण चुराना. लेकिन ध्यान रखना कि तुम वहां ज्यादा देर मत रुकना, नहीं तो हमारा अंत हो जाएगा. राजकुमारी अपने बिस्तर के सिरहाने पर दर्पण रखती है. उसे जगाने से मत डरना. वह आधी रात को इतनी जोर से सोती है कि अगर तुम घोड़े पर सवार होकर भी उसके शयनकक्ष में गए तो भी वह नहीं जागेगी, बस दर्पण उठाना और भाग जाना!

बाज़ ने अपनी चोंच से अपनी पूँछ से दो पंख निकाले और मूर्ख से फिर कहा:

"जब तुम गेट पर पहुंचोगे तो तुम्हें दो भालू दिखाई देंगे. उनमें से प्रत्येक पर एक पंख फेंकना फिर तुम वहां से गुजर सकोगे."

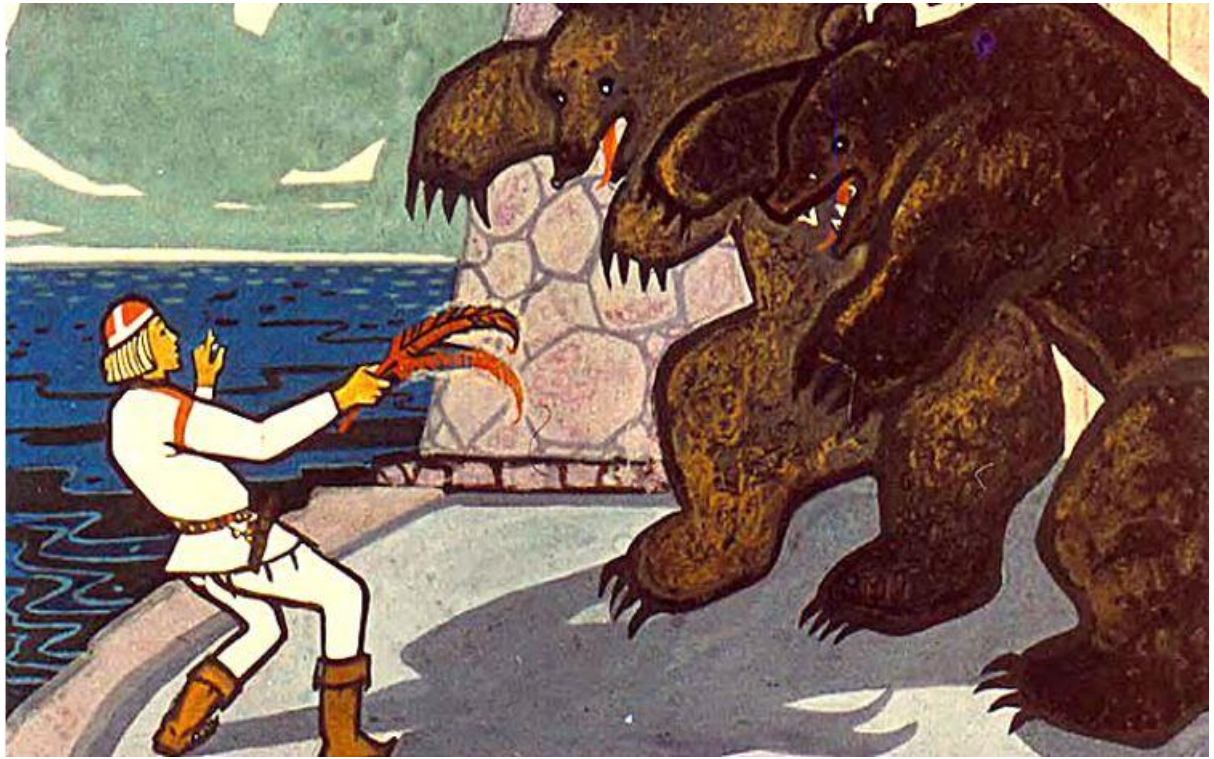

मूर्ख पंख लेकर महल में चला गया.

भालुओं ने उसे देखा और तुरंत अपने पिछले पंजों पर खड़े हो गये. लेकिन मूर्ख ने तुरंत उन पर पंख फेंक दिए और भालुओं ने उन्हें छीन लिया और वे फिर सो गए.

मूर्ख अब महल में आ गया, और यद्यपि ऐसा लग रहा था कि सभी लोग सो रहे थे, लेकिन वहां धूप वाले दिन की तरह ही रोशनी थी और उसे राजकुमारी को ढूंढने में देर नहीं लगी. उसने तकिये के नीचे से जादुई दर्पण निकाला, उसे अपनी छाती में छिपाया और वो बाहर निकलने ही वाला था कि तभी उसकी नजर खाने-पीने की चीजों से भरी एक मेज पर पड़ी.

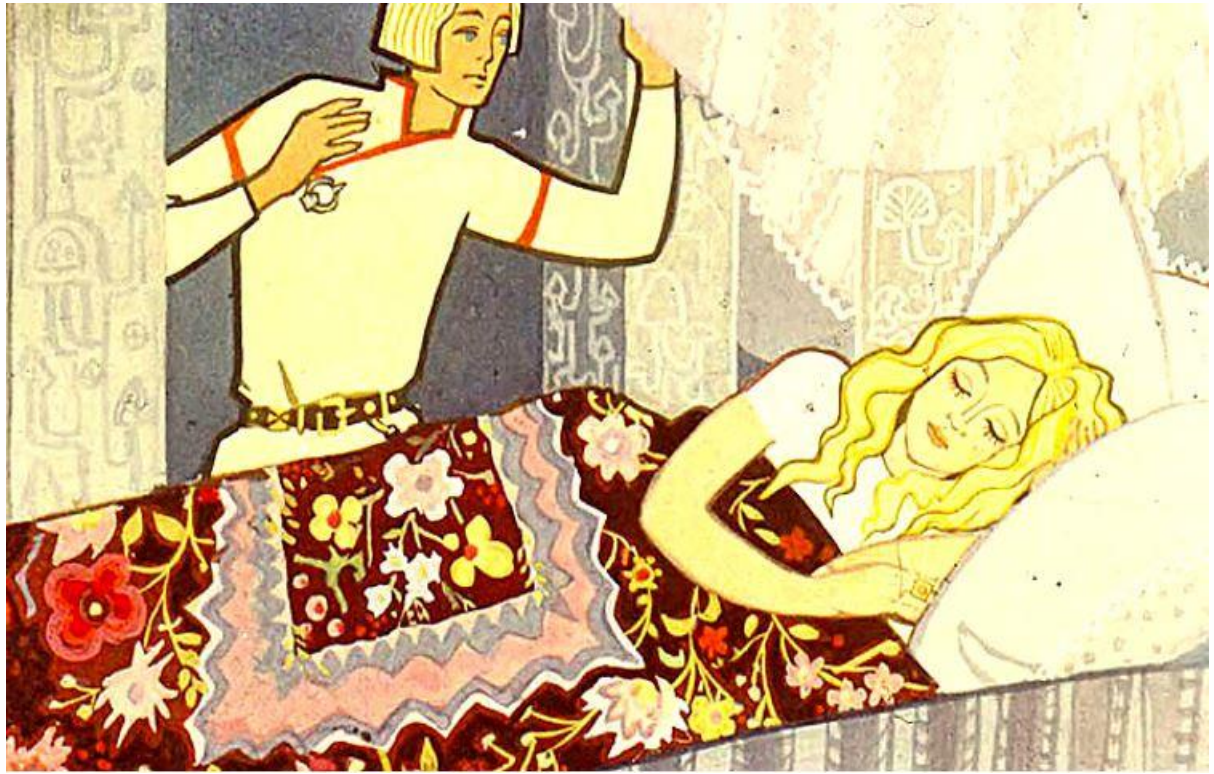

"अभी भागने का काफी समय है," उसने सोचा. "पहले मैं कुछ खाऊंगा."

फिर वह तैयार हो गया और बड़े चाव से खाने लगा.

जब उसका पेट भर गया और वह अब खा-पी नहीं सकता, तो उसने अपने आप से कहा:

"मुझे आश्चर्य है कि राजकुमारी देखने में कैसी होगी. मुझे लगता है कि बेहतर होगा कि मैं उसे देख लूं!"

वह बिस्तर के पास आया और राजकुमारी इतनी प्यारी थी कि वह उसे देखकर फूला नहीं समाया!

और उसकी उंगली पर सूरज की तरह चमकदार, सबसे सुंदर अंगूठी चमक रही थी! मूर्ख खुद को रोक नहीं सका इसलिए उसने इसे बहुत धीरे से उतारा और ऐसा करने के बाद, वो गेट की ओर भागा.

बाज़ उसकी लंबी अनुपस्थिति से इतना क्रोधित हुआ कि उसने अपनी चोंच से उसे उसके काफ्तान से पकड़ लिया और फिर हवा में उड़ गया. भालू जाग रहे थे और वे उठे और गुर्राते हुए बाज़ पर झपटे, लेकिन तब तक वह सिर के ऊपर था और उनकी पहुंच से बाहर था.

वे समुद्र के ऊपर उड़ गए और बाज़ नीचे गिर गया, मूर्ख को घुटनों तक पानी में डुबाया और फिर ऊपर उठ गया.

थोड़ा आगे बढ़ने पर वह दूसरी बार नीचे गिरा और मूर्ख को उसकी छाती तक और फिर उसकी गर्दन तक पानी में डुबाया. मूर्ख बुरी तरह डर गया और हर बार उन्मादी आवाज में चिल्लाया. थोड़ी देर बाद वह थोड़ा पास आया और उसने बाज से पूछा:

"तुमने मुझे इस तरह समुद्र में किसलिए डुबाया? क्यों, मैं बहुत डर गया था. यह मजाक करने का कोई तरीका नहीं है."

बाज ने कहा, "इसे अपने लिए एक सबक समझो." अब तुम्हें पता चल गया होगा कि जब तुम महल में घूम रहे थे तो मैं गेट पर इंतजार करते समय मुझ पर क्या गुजर रही थी. जब मैंने तुम्हें घुटनों तक पानी में डुबोया तो तुम डर गये. ठीक है, जब तुम राजकुमारी के शयनकक्ष की ओर देख रहे थे और भालुओं ने अपना सिर उठा लिया था, तब मैं भी ऐसा ही कर रहा था. जब मैंने तुम्हें छाती तक पानी में डुबाया तो तुम डर गये. ठीक है, जब तुमने खाना शुरू किया और भालू उठ बैठे तो मैं भी वैसी ही हालत थी. जब मैंने तुम्हें गर्दन तक पानी में डुबाया तो तुम डर गये. खैर, मैं भी डर गया था - बुरी तरह से - जब तुमने राजकुमारी की उंगली से अंगूठी उतारनी शुरू कर दी और तब भालू अपने पिछले पैरों पर खड़े हो गए थे. क्यों, अगर राजकुमारी जाग जाती, तो भालुओं ने मेरे टुकड़े-टुकड़े कर दिए होते और मुझे नहीं लगता कि तब तुम भी जीवित बच पाते!

"भगवान का शुक्र है कि वह नहीं उठी!" मूर्ख ने सोचा.

वे उड़कर सबसे बुजुर्ग महिला के घर गए और उसे दर्पण दिखाया. बूढ़ी महिला ने कहा:

"मेरे लिए इसका कोई उपयोग नहीं है, मैं इतनी बूढ़ी हो गई हूं कि मुझे इससे अब कोई लाभ नहीं होगा. लेकिन तुम्हें इसकी आवश्यकता हो सकती है."

और उसने मूर्ख को तीन स्विच दिए.

"बस इन स्विचों को हिलाना," उसने कहा, "और उनसे तुम्हारी हर इच्छा पूरी हो जाएगी."

मूर्ख ने उसे धन्यवाद दिया, फिर से अपने पुराने घोड़े की पीठ पर चढ़ गया और चला. वह दूसरी बुढ़िया के घर पहुंचा और उसे भी दर्पण दिखाया.

"मेरे लिए इसका कोई उपयोग नहीं है, मैं इतनी बूढ़ी हो गई हूं कि इससे मुझे अब कोई फायदा नहीं होगा." वृद्ध महिला ने कहा, “लेकिन तुम्हें इसकी ज़रूरत पड़ सकती है.”

और उसने मूर्ख को एक छोटा थैला दिया.

"यदि तुम्हारे पास खाने के लिए कुछ नहीं हो, तो इस थैले को खोल देना," उसने कहा, "और इसमें से रोटियाँ निकलकर बाहर आ जाएँगी."

मूर्ख ने उसे धन्यवाद दिया, अलविदा कहा और फिर चल पड़ा.

वह सबसे छोटी बूढ़ी औरत के घर आया और उसे दर्पण दिखाया, और उसने कहा:

"मेरे लिए इसका कोई उपयोग नहीं है, मैं इतनी बूढ़ी हो गई हूं कि इससे अब मुझे कोई लाभ नहीं होगा! लेकिन तुम्हें इसकी आवश्यकता हो सकती है."

और उसने उसे कैंची की एक जोड़ी दी.

"अगर तुम्हारे कपड़े खराब हो जाएं," उसने कहा, "तो बस इस कैंची को क्लिक करना."

मूर्ख ने उसे धन्यवाद दिया, अलविदा कहा और आगे बढ़ गया.

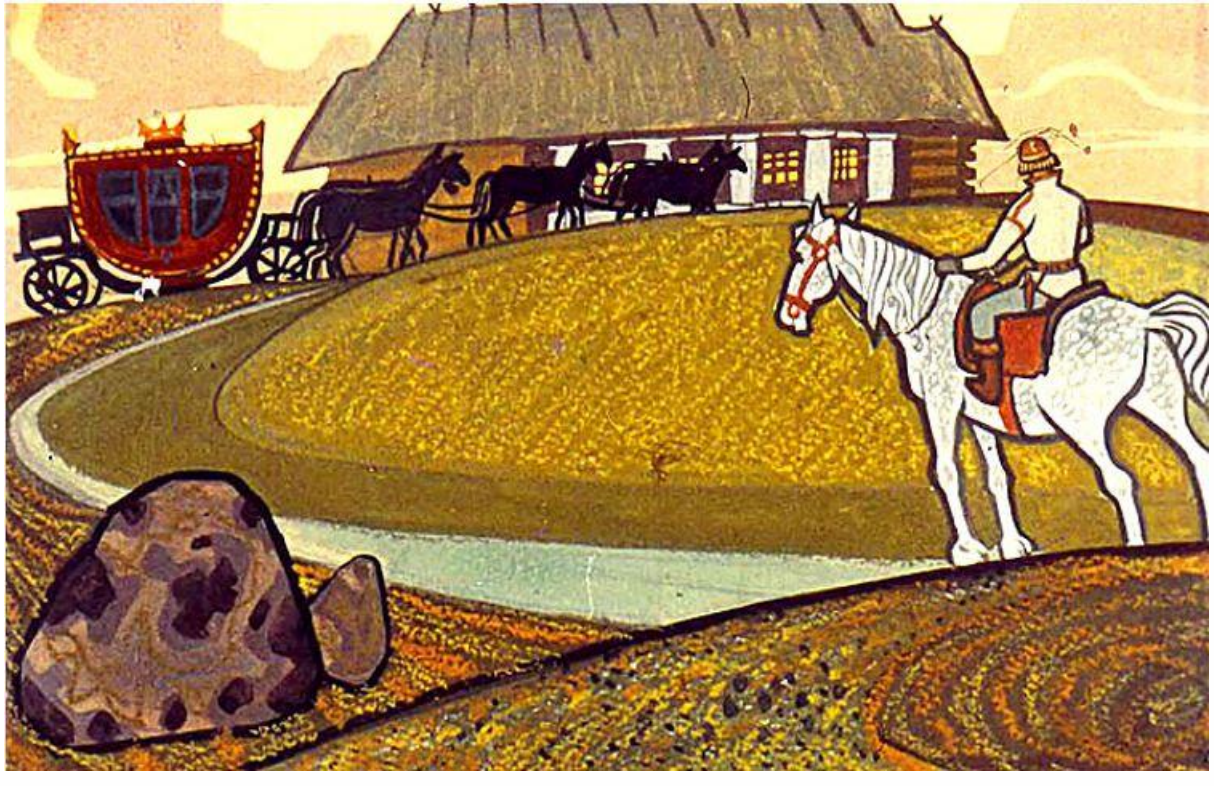

वह उसी सराय तक गया और देखा कि कोच और छह घोड़े पहले की तरह ही वहां पर खड़े थे.

"मैं अंदर जाऊंगा और अपने भाइयों को ढूंढूंगा," मूर्ख ने खुद से कहा और वह सराय में घुसा.

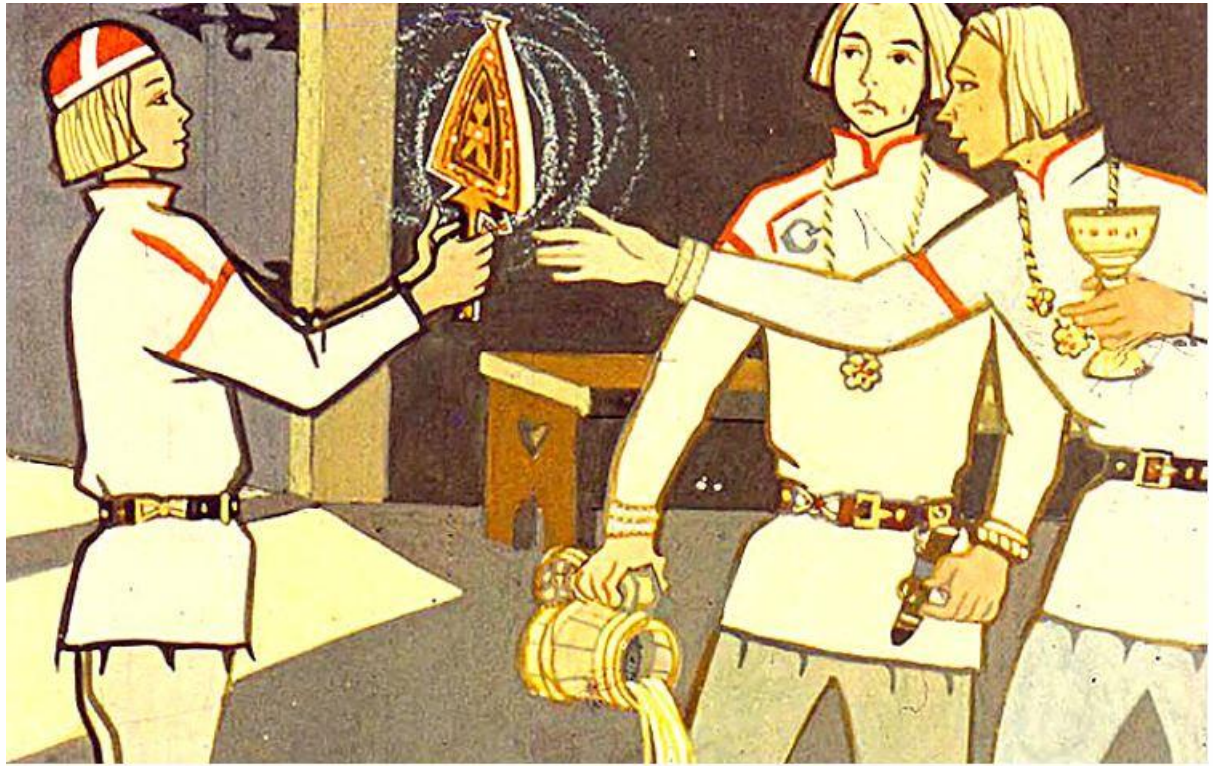

उसके भाइयों ने उसे देखा और कहा:

"अच्छा, क्या तुम्हें दर्पण मिल गया?"

"हां, वो मेरे पास है!" मूर्ख ने उत्तर दिया.

फिर भाइयों ने उसे खाना-पीना देना शुरू कर दिया, और जब उसे काफी नशा चढ़ गया, तो कहा:

"मूर्ख, तुम हमें दर्पण दिखाओ! अगर वो जादुई दर्पण नहीं है तो क्या होगा?"

"ओह वो यह रहा!" मूर्ख ने कहा और वह दर्पण निकालकर लाया. भाइयों ने उसमें झाँककर देखा तो उन्हें पता चला कि वह सचमुच एक जादुई दर्पण था.

"यह तो गज़ब का खजाना हैं!" उन्होंने कहा. "तुम्हें इसकी क्या ज़रुरत. हम इसे अपने लिए ले लेंगे."

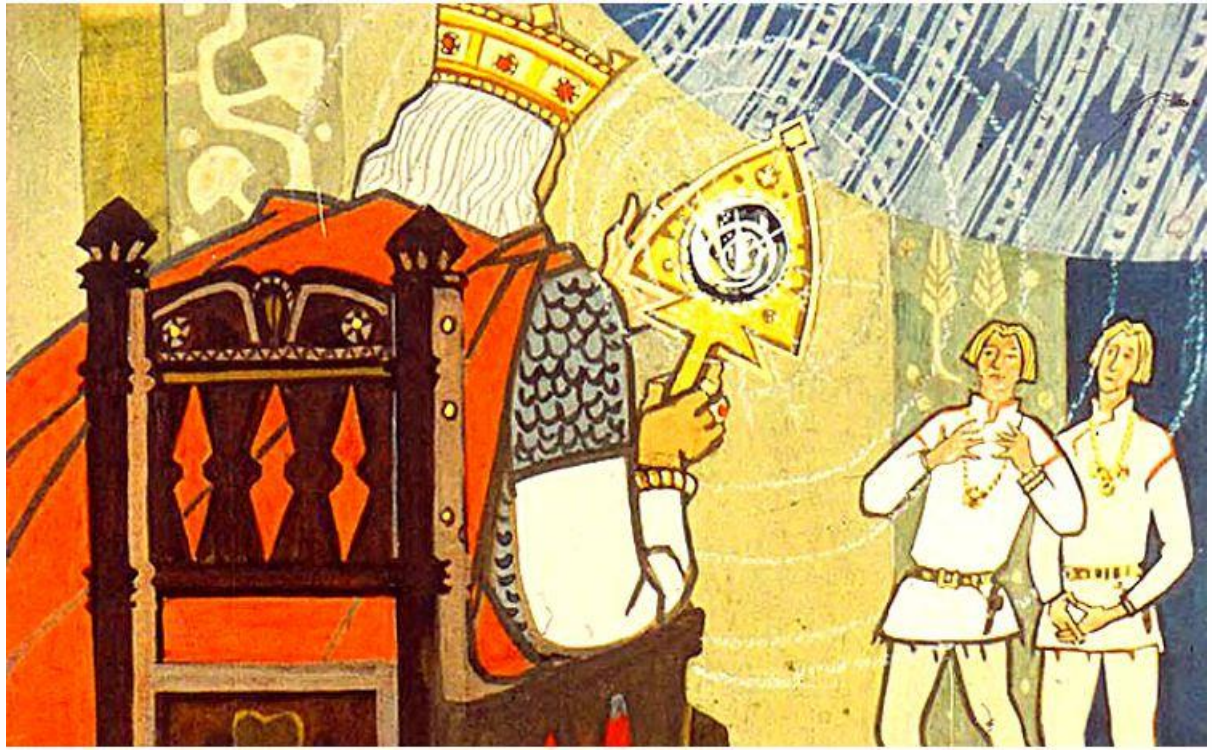

और फिर दोनों बड़े भाई दर्पण लेकर चले गये.

"अब क्या हम भाग्यशाली नहीं हैं!" उन्होंने कहा. "देखो, हमें धोखा देने की कोशिश मत करना, मूर्ख, नहीं तो हम तुम्हें ऐसा सबक सिखाएंगे जिसे तुम कभी नहीं भूलोगे."

वे अपने पिता के पास आए और उन्हें दर्पण दिया और जैसे ही राजा ने दर्पण में देखा, वो फिर से युवा बन गए.

"तुम कितने अच्छे चतुर लोग हो!" राजा ने कहा. "लो, मेरा आधा राज्य ले लो, क्योंकि मैंने तुमसे यही वादा किया था.“

तभी मूर्ख दौड़ा हुआ आया और वो रोने और सिसकने लगा.

"वह मैं ही था जिसने दर्पण पाया था," उसने कहा. "मेरे बड़े भाइयों ने दर्पण मुझसे छीन लिया! वे सराय में ही रहे और कभी कहीं नहीं गए."

"तुम कितने मूर्ख हो!" उसके पिता ने कहा.

"ऐसे मूर्ख को जीवित नहीं रहना चाहिए!" बड़े भाइयों ने कहा, "उसे मौत की सजा मिलनी चाहिए!"

मूर्ख ने यह समझाने की कोशिश की कि उसे दर्पण कैसे मिला और वह बाज़ की पीठ पर बैठकर कैसे उड़ा, लेकिन इससे राजा पहले से भी अधिक गुस्सा हो गया.

"उसे समुद्र के किनारे ले जाओ," उसने अपने बड़े बेटों से कहा, "उसे बिना चप्पू वाली नाव में डालो और फिर नाव को समुद्र में धकेल दो."

भाइयों ने मूर्ख को पकड़ लिया, उसे बिना चप्पू वाली नाव में डाल दिया और नाव को समुद्र में धकेल दिया.

"बाज़ तुम्हारी मदद करेगा!" वे हँसते हुए चिल्लाये.

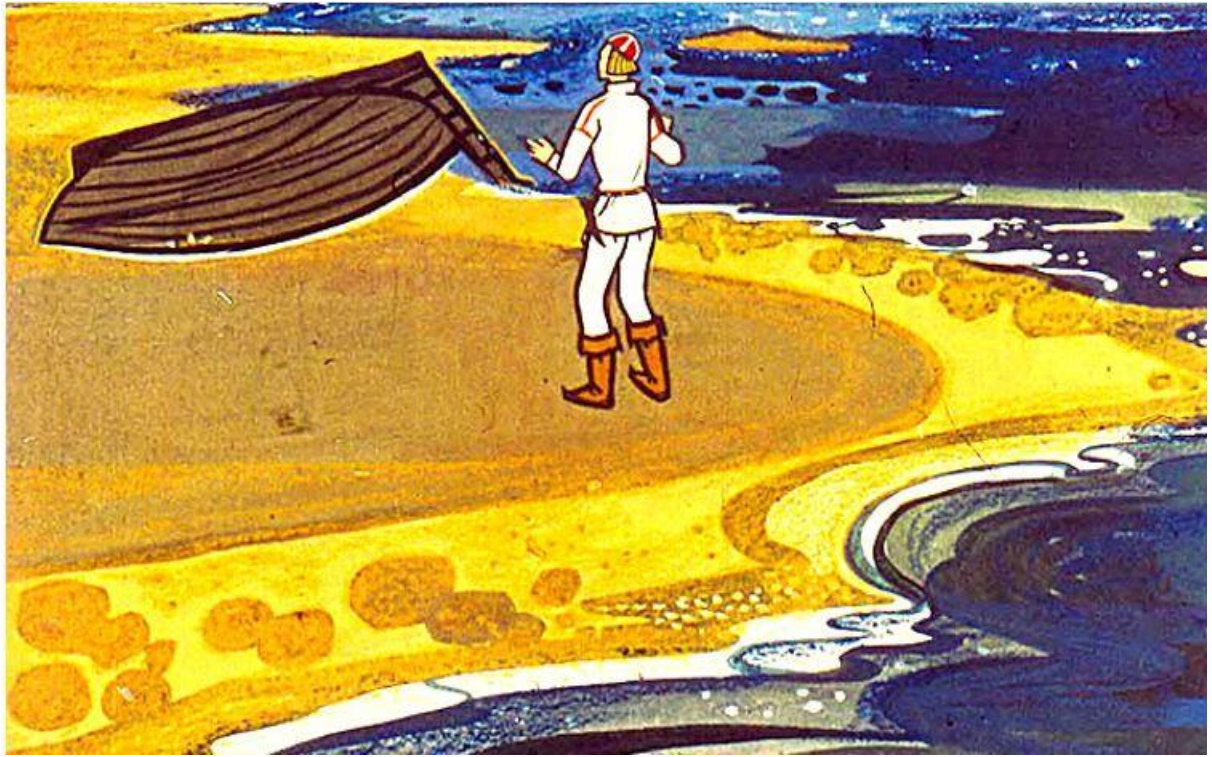

हवा ने मूर्ख की नाव को खुले समुद्र में भेज दिया और लहरें उसे बहुत देर तक इधर-उधर उछालती रहीं, आख़िरकार उन्होंने उसे कुछ चट्टानों पर फेंक दिया. मूर्ख ने अपने चारों ओर देखा और उसे समुद्र के बीच में एक द्वीप दिखाई दिया.

"मेरा अंत आ गया है," उसने सोचा. "मैं अभी एक रेगिस्तानी द्वीप पर हूं! बेहतर होगा कि मैं कम-से-कम नाव को किनारे तक खींचने की कोशिश करूँ."

उसने नाव को खींचने की कोशिश की लेकिन पाया कि यह उससे कहीं अधिक था जो वह कर सकता था, क्योंकि उसकी छाती में पड़ी कोई चीज़ उसे रोक रही थी.

उसने अपना हाथ अपनी कमीज़ में डाला, और लो! उसे वे तीन स्विच मिले जो सबसे बुजुर्ग महिला ने उसे दिए थे.

"मैं बूढ़ी महिलाओं के उपहारों के बारे में बिल्कुल भूल गया था!" उसने कहा. "अब मैं देखूँगा कि क्या वे सचमुच जादुई उपहार हैं."

उसने स्विच लिया, उन्हें एक बार हिलाया और कहा:

"यहाँ एक शहर विकसित हो और उसमें बहुत सारे लोग हों!"

और जैसे ही उसके मुंह से ये शब्द निकले, जमीन से एक नगर उठ खड़ा हुआ और, मानो हवा से पैदा हुआ हो, और वहां बहुत सारे लोग प्रकट हुए, लेकिन वो अपने जन्म के दिन वाले दिन जैसे नग्न थे!

फिर मूर्ख ने कैंची निकाली, उसे एक बार क्लिक किया और फिर कहा:

"आओ, कैंची, इन शहरवासियों को कपड़े पहनाओ!"

और तुरन्त कपड़ों से लदी हुई बहुत-सी गाड़ियाँ चली आईं. शहरवासियों को बस आगे आकर अपने कपड़े पहनने थे!

लेकिन यह अंत नहीं था, क्योंकि उनके पास खाने के लिए कुछ भी नहीं था.

मूर्ख ने अपना थैला निकाला और उसे खोल दिया और तुरंत उसमें से एक के बाद एक रोटियाँ गिरने लगीं, जो दस राज्यों के लिए पर्याप्त थीं!

मूर्ख, द्वीप पर राजा बन गया और सभी द्वीपवासी उससे बहुत प्रसन्न थे, जो एकदम स्वाभाविक था, क्योंकि स्विच, कैंची और बैग की बदौलत उन्हें कभी किसी चीज़ की कमी नहीं हुई.

एक दिन युवा राजा समुद्र के किनारे टहल रहा था, तभी उसने समुद्र में बहुत दूर एक जहाज देखा.

"जल्दी, मेरी नाव कहाँ है?" उसने पूछा.

उसके लिए एक नाव लाई गई और वह उसमें चढ़ गया और जहाज़ तक गया.

जैसे ही वह उसके करीब पहुंचा, उसने जहाज पर एक राजकुमारी को देखा, वही राजकुमारी जिससे उसने जादुई दर्पण चुराया था.

राजा ने राजकुमारी का स्वागत किया और उसे अपने राज्य में आने के लिए आमंत्रित किया.

"धन्यवाद, लेकिन मैं आपके साथ नहीं आ सकती," राजकुमारी ने कहा. "मुझे आगे बढ़ना होगा. मेरा जादुई दर्पण मुझसे चुरा लिया गया है, आप देख रहे हैं, और मेरी सोने की अंगूठी भी. और जिसके पास मेरी अंगूठी है मुझे उससे ही शादी करनी होगी. क्या होगा अगर वह व्यक्ति एक बूढ़ा आदमी निकला या एक दुष्ट जादूगर या कोई राक्षस निकला? उसकी मदद करने के लिए मेरे जादुई दर्पण के साथ वह अगले सौ साल तक जीवित रहेगा और तब तक आराम नहीं करेगा जब तक वह मुझे ढूंढ नहीं लेता, लेकिन वह समुद्र में मेरी तलाश करने के बारे में नहीं सोचेगा, इसलिए मैंने अपना शेष जीवन समुद्र में नौकायन करते हुए बिताने का निर्णय लिया है."

इस पर मूर्ख ने अपनी उंगली से उसकी अंगूठी उतारकर राजकुमारी को दे दी, जो उसे देख राजकुमारी बहुत खुश हुई, क्योंकि उसका होने वाला पति युवा, सुंदर और एक राजा था!

वे किनारे की ओर चले और जिन लोगों ने उन्हें देखा उन सभी लोगों ने आनन्द से उनका स्वागत किया.

उसके तुरंत बाद राजा और राजकुमारी की शादी हुई. उनकी शादी को भव्य तरीके से मनाया गया, शहर के लोग कई महीनों तक दावत करते रहे और खुशियाँ मनाते रहे.

जहाँ तक जादुई दर्पण की बात है, वह खो गया था और वो तब से आज तक वो किसी को नहीं मिला है.